शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'निर्मला' उपन्यास
Date ______ Page ______

लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- यथार्थवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- यथार्थवाद का अर्थ है यथातथ्य चित्रण अर्थात् जैसा है वैसा ही चित्रण। असम्भव कल्पनाओं से हटकर जीवन और जगत का स्वाभाविक चित्रण ही यथार्थवाद कहलाता है। यथार्थवाद वस्तु सत्य, युग सत्य और जीवन सत्य को चित्रित करता है और यह चित्रण सत्यानुभूति से प्रेरित होता है। जीवन के यथार्थ को अनुभूति की प्रेरणा से सामने रख देना ही वास्तविक यथार्थवाद है। यथार्थवाद यथातथ्य क्रूर नग्न चित्रण से एक ओर जीवन की विभीषिका का चित्रण करता है तो दूसरी ओर भाव और विचार उत्पन्न करके पाठक के हृदय और मस्तिष्क में आन्दोलन उत्पन्न करता है।

प्रश्न:- आदर्शवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- आदर्शवाद का अर्थ है नैतिक मानदण्डों के अनुरूप चित्रण अर्थात् जैसा होना चाहिए वैसा चित्रण करना। किसी समस्या या घटना का यथातथ्य चित्रण ही पर्याप्त नहीं होता, वरन् लेखक का दायित्व यह भी है कि वह नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाली होनी चाहिए। पात्रों के चरित्र में नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की आधारभूमि होनी चाहिए। अधिकतर लोग आदर्शवाद को कल्पना की ऊँची उड़ान मानते हैं, जिसमें लेखक वर्तमान की विभीषिका से त्रस्त होकर एक स्वप्न लोक का निर्माण करता है। किन्तु यह वास्तविक आदर्शवाद नहीं है। नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना एवं प्रतिष्ठा ही आदर्शवाद का मूल उद्देश्य है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 07/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० स० महावि० खुरसेना, प्रतीपूरा

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 - गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जयप्रकाश नारायण

प्रश्न:- आन्दोलन के नेतृत्व के सम्बन्ध में जयप्रकाश जी के क्या विचार थे? आन्दोलन का नेतृत्व वे किस शर्त पर स्वीकार करते हैं?

उत्तर: आन्दोलन के नेतृत्व के सम्बन्ध में जयप्रकाश नारायण के विचार थे कि युवा पीढ़ी नेतृत्व करें। उन्होंने 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का आह्वान किया था। उनके अनुसार लोकतंत्र में युवाओं की अहम भूमिका है। उनका युवाओं से कहना था - "आप नई पीढ़ी के लोग हैं। देश का भविष्य आपके हाथों में है" उत्साह है आपके अन्दर, जवानी है आपके अन्दर, आप नेता बनिये।

लेकिन युवाओं ने कहा - "जयप्रकाश जी, मार्ग-दर्शन से काम नहीं चलेगा, आपको नेतृत्व स्वीकार करना पड़ेगा।" जय प्रकाश जी टालते रहे, लेकिन अंत में वेल्लौर जाते समय उन्होंने युवाओं के आग्रह को स्वीकार किया। लेकिन नाम के लिए उन्हें नेता नहीं बनना था। वे इस शर्त पर नेता बनना चाहते थे कि उन्हें पीछे से कोई 'डिक्टेट' नहीं करे। उनके अनुसार - "मुझे सामने खड़ा करके और कोई हमें 'डिक्टेट' करे पीछे से कि क्या करना है, तो इस नेतृत्व को कल मैं छोड़ देना चाहूँगा। मैं सबकी बात सुनूँगा, लेकिन फैसला मेरा होगा।" वे इसी शर्त पर आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार करते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 09/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कु० सिं० महावि० मुरलिगंज, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० -पत्र
'निबंध माला' - गद्य खण्ड
शीर्षक - 'पेट', लेखक - पंडित प्रताप नारायण मिश्र

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न:- 'पेट' की महिमा का वर्णन लेखक ने किस रूप में किया है?

उत्तर:- पंडित प्रतापनारायण मिश्र के अनुसार पेट की महिमा अपरम्पार है। यह दो वर्णों का शब्द पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक को नियंत्रित करता है। यह इतना व्यापक है कि इसमें कितने ही ब्रह्माण्ड समाये हुए हैं और ये ब्रह्माण्ड भी ब्रह्म देवता के उदर में ही स्थान पाने वाले हैं। पेट की शायद इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए कदाचित् भगवान श्री कृष्ण ने भी अपना नाम दामोदर रखा था। इस पेट का बन्धन इतना बड़ा है कि इस रस्सी से कोई बच नहीं सकता है।

प्रश्न:- लेखक ने 'पेट' को सुन्दर और सामर्थ्यवान क्यों कहा है?

उत्तर:- निबंधकार पंडित प्रताप नारायण मिश्र 'पेट' को सुन्दर और सामर्थ्यवान इसलिए मानते हैं कि प्राचीन कालीन सुन्दरियाँ दामोदरी अथवा कृशोदरी कहलाती थी। यह पेट शक्ति का ऐसा पर्याय था कि राक्षसों का बन्धु 'सहोदर' और आर्यों का सबसे बलशाली पुरुष 'वृकोदर' कहलाता था। धार्मिक दृष्टिकोण से भी इस पेट का कम महत्व नहीं है। माताएँ अपनी संततियों को नौ मास पेट में ढोती हैं, इसलिए धरती पर इनसे अधिक पूज्य दूसरा कोई देवी-देवता नहीं है।

प्रश्न:- लेखक के अनुसार 'पेट' की आँच कैसी होती है?

उत्तर:- 'पेट' की आँच बड़ी कड़ी होती है। इसे सहना बड़ा कठिन है। इसकी प्रचण्डता के समक्ष लोक और धर्म-कर्म सभी नतमस्तक हो जाते हैं। यदि यह पेट बिना परिश्रम के भरने लगे तो इससे कमजोरी भी उत्पन्न होती है। आदमी की तबियत रंगीन हो जाती है और वह तरह-तरह के हसीन सपने देखने लगता है। निबंधकार का स्पष्ट मानना है कि मानव को परिश्रम करके उपार्जन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य का विचार शुद्ध रहता है। वह पराश्रित नहीं रहता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी   प्रा०न०
रा०उ० सं० महावि० सुरखसेना, प्रतिपियाँ